11

सत्यमेव जयते

मातृ स्वास्थ्य मॉड्युल 11

गर्भावस्था के दौरान
एच आई वी संक्रमण की जांच, प्रबन्धन एवं
शिशु में संचरण की रोकथाम

Screening, Management & Prevention of Parent to Child Transmission of HIV

राजस्थान सरकार
चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग,
राजस्थान, जयपुर।

तकनीकी सहयोग :– युनिसेफ, जयपुर।

मॉड्यूल हेतु क्रमिक (Cascade) सारणी

राज्य स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः जिला स्तर संभागी प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

जिला स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः ब्लॉक स्तर संभागी प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

ब्लॉक स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः उपकेन्द्र स्तर से चयनित पीयर सुपरवाईजर (ए.एन.एम. एवं आशा) प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

सेक्टर स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमः पीयर सुपरवाइजर द्वारा समुदाय स्तर पर कार्यरत समस्त फ्रन्ट लाइन कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मॉड्यूल द्वारा समस्त कार्यकर्ताओं की क्षमता वर्धन हेतु इस कार्यक्रम में पॉच गतिविधियां सम्मिलित की गई हैः– **प्रशिक्षण, अभ्यास, गृहकार्य, सुपरविजन एवं समीक्षा**

गर्भावस्था में एचआईवी जांच एवं प्रबन्धन के लक्ष्य

- माता एवं शिशु में रूग्णता एवं मृत्युदर को कम करना।
- जन्मजात एचआईवी का उन्मूलन करना।

गर्भावस्था में एचआईवी जांच एवं प्रबन्धन के उद्देश्य

- सभी गर्भवती महिलाओं की एचआईवी की जांच गर्भावस्था के प्रथम तीन महिनों में आवश्यक रूप से हो।
- एचआईवी संक्रमण का पता लगाकर गर्भवती महिला को उपचार सुविधा हेतु एआरटी केन्द्र से जोड़ना।
- सभी एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं का संस्थागत प्रसव करवाना। (प्रथम रेफरल यूनिट एवं उच्च स्तरीय संस्थान)
- गर्भवती माता से उसके शिशु में होने वाले एचआईवी संक्रमण की रोकथाम करना।

इस मॉड्यूल के लिये **सम्भावित समय – 3 घंटे**

आवश्यक साम्रगी

- मॉड्यूल की प्रति
- हैण्डआऊट की प्रतियॉ (11.1, 11.2, 11.3, 11.4)
  - ✓ हैण्डआऊट 11.1: पीपीटीसीटी कार्यक्रम
  - ✓ हैण्डआऊट 11.2: एचआईवी परीक्षण **(Whole Blood Finger Prick)** जांच
  - ✓ हैण्डआऊट 11.3: गर्भावस्था के दौरान पीपीटीसीटी सेवाएं
  - ✓ हैण्डआऊट 11.4: प्रसव के दौरान पीपीटीसीटी सेवाएं
  - ✓ हैण्डआऊट 11.5: प्रसवोत्तर पीपीटीसीटी सेवाएं
  - ✓ हैण्डआऊट 11.6: HIV जॉच एवं प्रबन्धन में चिकित्साकर्मियो की भूमिका
- कुर्सियॉ एवं दरी
- चाक एवं बोर्ड
- Whole Blood Finger Prick टेस्ट प्रदर्शन हेतु।

प्रस्तावना

एच. आई. वी. (विषाणु) का पूरा नाम ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएन्सी वायरस है। इस वायरस के संक्रमण से मनुष्य के शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता (सी.डी 4) में कमी आती है और वह अनेक गंभीर, अक्सर घातक संक्रमणों से पीड़ित हो सकता है। इन्हें ''समयानुवर्ती संक्रमण''(ओआई) कहा जाता हैं। रोगी का शरीर इन बीमारियों से लड़ नहीं पाता, रोगी की यह अवस्था एड्स (सीडी4 का गणन 200 से कम) कहलाती है।

राज्य में एचआईवी संक्रमण प्रसार की स्थिति

- राज्य में वर्ष 2011 में व्यस्क समूह (15 से 49 आयु वर्ग) में एचआईवी के संक्रमण की दर 0.17 प्रतिशत है तथा अनुमानतः लगभग 76 हजार लोग एचआईवी के साथ जी रहे है।
- राज्य में वर्ष 2012–13 के (एचएसएस) अनुसार गर्भवती महिलाओं में एचआईवी संक्रमण की दर 0.32 प्रतिशत एवं
- लगभग राज्य में प्रति वर्ष 02 हजार एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं का अनुमान लगाया जाता है।

पीपीटीसीटी कार्यक्रम के प्रमुख आधार स्तम्भ

- नये एचआईवी संक्रमणों की रोकथाम।
- एचआईवी संक्रमित महिलाओं में अवांछनीय गर्भधारण की रोकथाम (परिवार नियोजन संबंधी परामर्श सेवायें उपलब्ध कराना)।
- एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला की देखभाल एवं उपचार।
- एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला एवं उसके बच्चें दोनो को देखभाल सहायता एवं उपचार सेवायें उपलब्ध कराना।

पीपीटीसीटी कार्यक्रम

पीपीटीसीटी कार्यक्रम के बारे में विस्तृत रुप से जानने के लिए परीवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियो में से किसी एक को खड़ा कर के हैण्डआऊट 11.1 पढ़ने को कहे।

एचआईवी परीक्षण (Whole Blood Finger Prick) – त्वरित जांचा

एचआईवी (Whole Blood Finger Prick) जॉच विधि बारे में विस्तृत रुप से जानने के लिए परीवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियो में से किसी एक को खड़ा कर के हैण्डआऊट 11.2 पढ़ने को कहे।

गर्भावस्था के दौरान पीपीटीसीटी सेवाएं

गर्भावस्था के दौरान पीपीटीसीटी सेवाओं के बारे में विस्तृत रुप से जानने के लिए परीवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियो में से किसी एक को खड़ा कर के हैण्डआऊट 11.3 पढ़ने को कहे।

प्रसव के दौरान पीपीटीसीटी सेवाएं

प्रसव के दौरान पीपीटीसीटी सेवाओं के बारे में विस्तृत रुप से जानने के लिए परीवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियो में से किसी एक को खड़ा कर के हैण्डआऊट 11.4 पढ़ने को कहे।

प्रसवोत्तर पीपीटीसीटी सेवाएं

प्रसवोत्तर पीपीटीसीटी सेवाओं के बारे में विस्तृत रुप से जानने के लिए परीवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियो में से किसी एक को खड़ा कर के हैण्डआऊट 11.5 पढ़ने को कहे।

HIV जॉच एवं प्रबन्धन में चिकित्साकर्मियो की भूमिका

एच.आई.वी संक्रमण की जॉच मे ं चिकित्साकर्मियों की भूमिका के बारे मे ं विस्तृत रुप से जानने के लिए परीवेक्षक को चाहिए की वह प्रतिभागियो में से किसी एक को खड़ा कर के हैण्डआऊट 11.6 पढ़ने को कहे।

पी.पी.टी.सी.टी. सेवाओं के आवश्यक तत्व

- सामान्य रूप से एचआईवी परामर्श एवं जांच सुविधा उपलब्ध करवाना (छोड़ने के विकल्प के साथ)
- साथी एवं परिवार के अन्य सदस्यों को भी शामिल करना।
- एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला को एआरटी दवाई उपलबध करवाना।
- एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला को संस्थागत प्रसव हेतु प्रेरित करना।
- उपरोक्त महिला को यौन रोग , क्षय रोग एवं अवसरवादी संक्रमणों संबंधी सुविधा भी उपलबध करवाना।
- एच आईवी संक्रमित महिलाओं को पोषण, परामर्श और मनोवैज्ञानिक सहयोग प्रदान करना।
- एचआईवी संक्रमित माता से उत्पन्न शिशु को नेविरापाईन सिरप उपलब्ध करवाना।
- एचआईवी संक्रमित माता से उत्पन्न शिशु का फोलोअप करना।
- ईआईडी एवं सीपीटी दिशा निर्देशों के अनुसार जन्म से 6 सप्ताह के बाद शुरू करवाना।

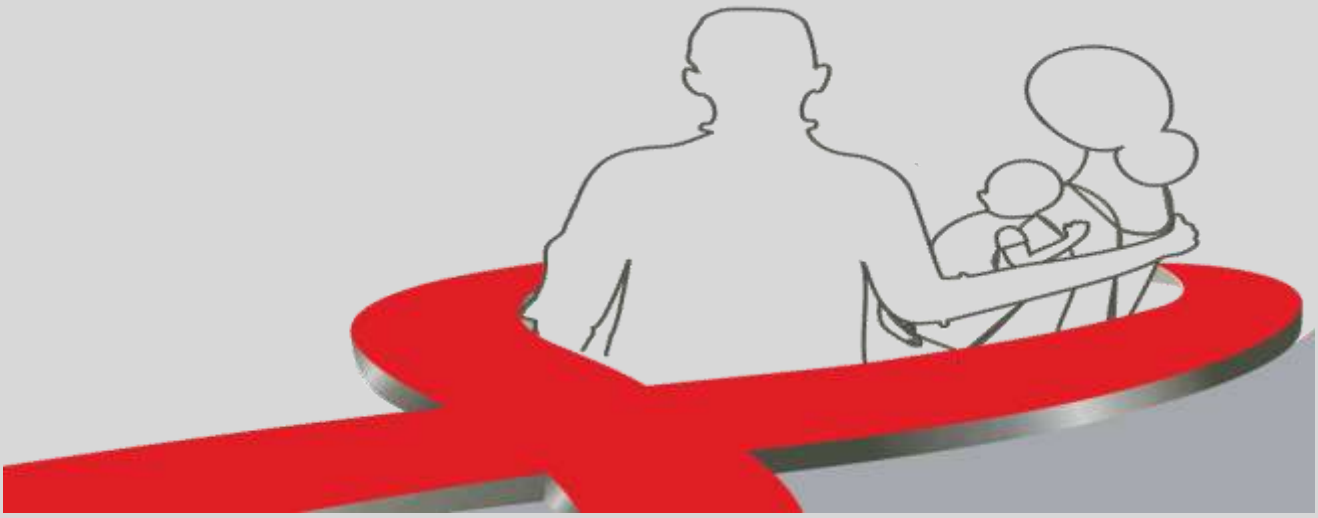

हैण्डआऊट 11.1

एचआईवी/एड्स से जुडे महत्वपूर्ण तथ्य

- विश्व मे पहला एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति की पहचान जून 1981 में संयुक्त राज्य अमेरिका में की गई थी।
- देश में एचआईवी से संक्रमित प्रथम व्यक्ति की पहचान वर्ष 1986 में चैन्नई (तमिलनाडू) में की गई थी।
- राज्य में एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति की सर्वप्रथम पहचान वर्ष 1987 में पुष्कर (अजमेर) में की गई।
- एचआईवी पीड़ित लोगों की संख्या की दृष्टि से भारत का विश्व मे तीसरा स्थान है।
- एचआईवी आंकलन 2012 के अनुसार भारत में एचआईवी/एड्स पीड़ित लोगों की संख्या वर्ष 2011 में 15–49 वर्ष आयु वर्ग के लोगो ंमें एचआईवी की 0.27 प्रतिशत व्याप्तता के साथ 20.89 लाख है।
- भारत में कुल एचआईवी संक्रमणों में से 39 प्रतिशत (8.16 लाख) महिलाओं में तथा कुल संक्रमणों का 7 प्रतिशत (1.45 लाख) 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों में पाया गया।

एचआईवी संचरण

एचआईवी निम्न के द्वारा फैलता है	एचआईवी निम्न के द्वारा नही ंफैलता है
✓ एचआईवी पाजीटिव व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौनसंपर्क ✓ संक्रमित रुधिर/रुधिर उत्पादो ंका आधान ✓ सुइयों का साझा प्रयोग ✓ गर्भावस्था, शिशु जन्म तथा स्तनपान के दौरान संक्रमितमां से बच्चे को	✗ चूमना और छूना ✗ हाथ पकडना ✗ एक ही शौचालय का इस्तेमाल करना ✗ साथ बैठकर एक ही प्लेट से भोजन लेना ✗ मच्छर के काटने से ✗ एक दूसरे के कपडों का इस्तेमाल करना ✗ एक ही कमरे में बैठना या सोना ✗ सार्वजनिक फोन का उपयोग ✗ खांसना और छींकना ✗ सार्वजनिक स्नानघर का इस्तेमाल करना, और लार, नाक–आंख से निकलने वाला पानी, आंसू, पसीना, मल–मूत्र

महिलाओंमें एचआईवी संक्रमण का अधिक जोखिम होता है क्योंकि

- महिलाओं के आंतरिक प्रजनन अंगों का अधिक भाग यौन संभोग में प्रभावित होता है।
- महिलाओं में यौन संभोग के दौरान वीर्य संचित हो जाता है।
- महिलाओं में किशोरावस्था में प्रजनन अंग अपरिपक्व होते है।
- महिलाओं में एसटीआई/आरटीआई संक्रमण की सम्भावना अधिक होती हैं।
- महिलाऐ ंअपने जीवन साथी/साथी को निरोध का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने की स्थिति मे ंनही ंहोती है।
- महिलाऐ ंअक्सर यौन उत्पीडन की शिकार होती है।

माता–पिता से बच्चेको एचआईवी के संचरण (पीपीटीसीटी) की रोकथाम कार्यक्रमः–

देश में माता–पिता से बच्चे में एचआईवी एड्स संचरण निवारण कार्यक्रम (पीपीटीसीटी) वर्ष 2002 में शुरू किया गया।पीपीटीसीटी कार्यक्रम का उद्देश्य एचआईवी पाजिटिव मां से बच्चे में एचआईवी संक्रमण की रोकथाम करना है।माता और बच्चे के कल्याण के लिए माता–पिता दोनो को पीपीटीसीटी कार्यक्रम मे भाग लेना चाहिए।यह कार्यक्रम एचआईवी पाजिटिव जोड़ों या माताओं की, गर्भावस्था, प्रसव और स्तनपान के दौरान कुछ सावधानियां बरत कर और दवाएं लेकर बच्चे को संक्रमण से बचाने में मदद करता है।

भारत में 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों को एचआईवी संक्रमण के संचरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम मां से बच्चे को संक्रमण है।**गर्भवती माता से उसके होने वाले शिशु में एचआईवी संक्रमण की दर सामान्यतया 30 प्रतिशत होती है।**

पीपीटीसीटी कार्यक्रम के प्रमुख आधार स्तम्भ

- नये एचआईवी संक्रमणों की रोकथाम।
- एचआईवी संक्रमित महिलाओं में अवांछनीय गर्भधारण की रोकथाम (परिवार नियोजन संबंधी परामर्श सेवायें उपलब्ध कराना)।
- एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला की देखभाल एवं उपचार।
- एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला एवं उसके बच्चें दोनो को देखभाल सहायता एवं उपचार सेवायें उपलब्ध कराना।

एचआईवी जांच एवं प्रबन्धन हेतु आवश्यक तैयारिया

- उपस्वास्थ्य केन्द्र एवं आउटरीच सत्रोंपर Whole Blood Finger PrickKit द्वारा जांच की सुविधा।
- उपस्वास्थ्य केन्द्र से उपर के स्वास्थ्य केन्द्र स्तर पर एचआईवी संक्रमण के पुष्टिकरण हेतु तीन रेपिड जांच किट् की उपलब्धता।
- दवायें, (TLE, Nevirapine & Co-trimoxazole), प्रशिक्षित मानव संसाधन, सुरक्षित प्रसव हेतु किट् एवं कन्ज्यूमेबल्स।
- प्रथम रेफरल यूनिट/आकस्मिक प्रसुति देखभाल हेतु उचित रेफरल।
- प्रथम रेफरल यूनिट पर स्त्री रोग एवं बाल रोग विशेषज्ञ की आवश्यक रूप से उपलब्धता।

हैण्डआऊट 11.2

(एचआईवी परीक्षण **(Whole Blood Finger Prick)** जांच)

एचआईवी जांच हेतु लक्षित समूह

- सभी गर्भवती महिलायें तथा ऐसी महिलायें जो गर्भधारण करने की सोच रही है।
- उच्च जोखिम पूर्ण व्यवहार करने वाले व्यक्ति जैसे कि महिला यौनकर्मी/पुरूष से पुरूष के साथ यौन सम्पर्क करने वाले/सूई से नशा करने वाले/माईग्रेन्ट्स/ड्राईवर्स।
- तपेदिक से संक्रमित व्यक्ति।
- यौन संचरित संक्रमणों से ग्रसित व्यक्ति।
- ऐसा कोई भी व्यक्ति जो स्वेच्छा से जांच कराना चाहे।

जांच के परिणाम की गोपनीयता बनाए रखना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

त्वरित जांच के लाभ निम्नानुसार हैं:

- त्वरित जांच एचआईवी संक्रमण की स्क्रीनिंग (आयु 18 महीने से अधिक) के लिए एक अत्यन्त संवेदी, किफायती, त्वरित, सरल तथा आम तौर पर काम ली जाने वाली जांच है।
- इस विधि द्वारा एचआईवी एन्टीवॉडीज की जांच की जाती है।
- इसका प्रयोग आसान होता है क्योंकि जांच करने के लिए किसी उपकरण की जरूरत नहीं होती।
- जांच किट को कमरे के तापमान पर भंडारित किया जा सकता है।
- यह जांच दूरस्थ स्वास्थ्य सुविधाओं (जैसेकि उपकेन्द्र/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र) में तथा वहां (जैसेकि आईसीटीसी/ब्लड बैंक आदि) की जा सकती है जहां परिणाम उसी दिन चाहिए।
- इसका प्रयोग पूर्ण रुधिर अथवा सीरम पर किया जा सकता है।
- इसका पठन आंख से किया जा सकता है।
- अपशिष्ट का प्रबंध करना आसान होता है।
- इसके परिणाम परंपरागत ऐलिसा परीक्षण जितने सही होते हैं।
- जिन व्यक्तियों का परीक्षण किया गया है, उनमें से प्रायः सभी को परीक्षणोपरांत परामर्श और उनके परिणाम उपलब्ध कराए जाते हैं क्योंकि केवल एक ही दौरा जरूरी होता है।क्योंकि परिणाम शीघ्र उपलब्ध कराए जाते हैं, पाजीटिव व्यक्तियों को चिकित्सीय देखभाल जल्दी प्राप्त हो जाती है।

Whole Blood Finger Prick जांच हेतु आवश्यक सामग्री –

- SD Bio-line एचआईवी टेस्ट किट्
- Buffer Solution
- Lancet
- Alcohol Cotton Swab
- Capillary

Whole Blood Finger Prick जांच किट् का संग्रहण

- उक्त जांच किट् 1–30 डिग्री सेन्टिग्रेड पर संग्रहित किया जाना चाहिये।

जांच हेतु सेम्पल संग्रहण एवं जांच प्रक्रिया –

- जांच से पूर्व टेस्ट किट् को कक्ष के तापमान पर लायें।
- जांच किट् के उपर Marker Pen से मरीज नाम/रजिस्ट्रेशन नम्बर अंकित करें।
- मरीज की Ring Finger के Tip को Alcohol Swab से विसंक्रमित करें।
- इसके पश्चात् Lancet से Prick करे।
- Prick के पश्चात् आई रक्त की पहली बूंद को Cotton Swab से साफ करें।
- तत्पश्चात् आने वाली रक्त की बूंद को Capillary में पूर्व चिन्हित् स्थान तक भरें। (20µl Whole Blood)
- इसके बाद उक्त रक्त को जांच किट् के सेम्पल वेल में डाले।
- इसके बाद Buffer Solution की चार बूंदें धीरे–धीरे सेम्पल वेल में डालें।
- उक्त जांच का परिणाम 5–20 मिनिट के पश्चात् देखें।

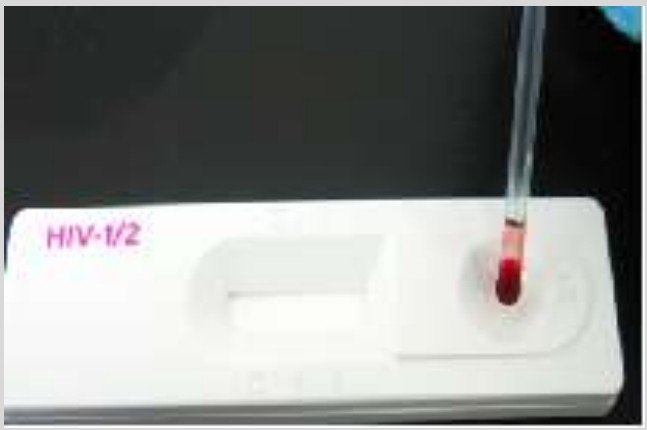

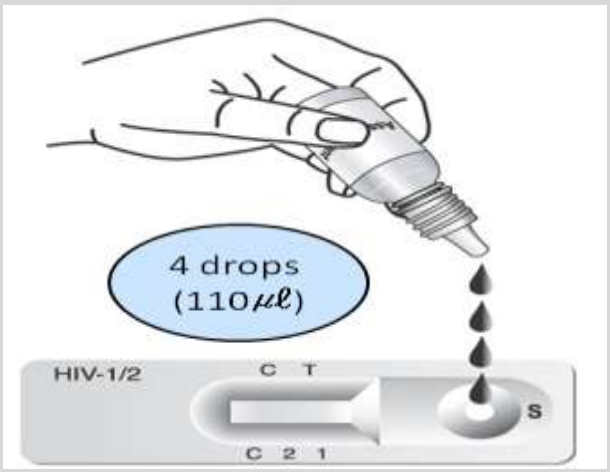

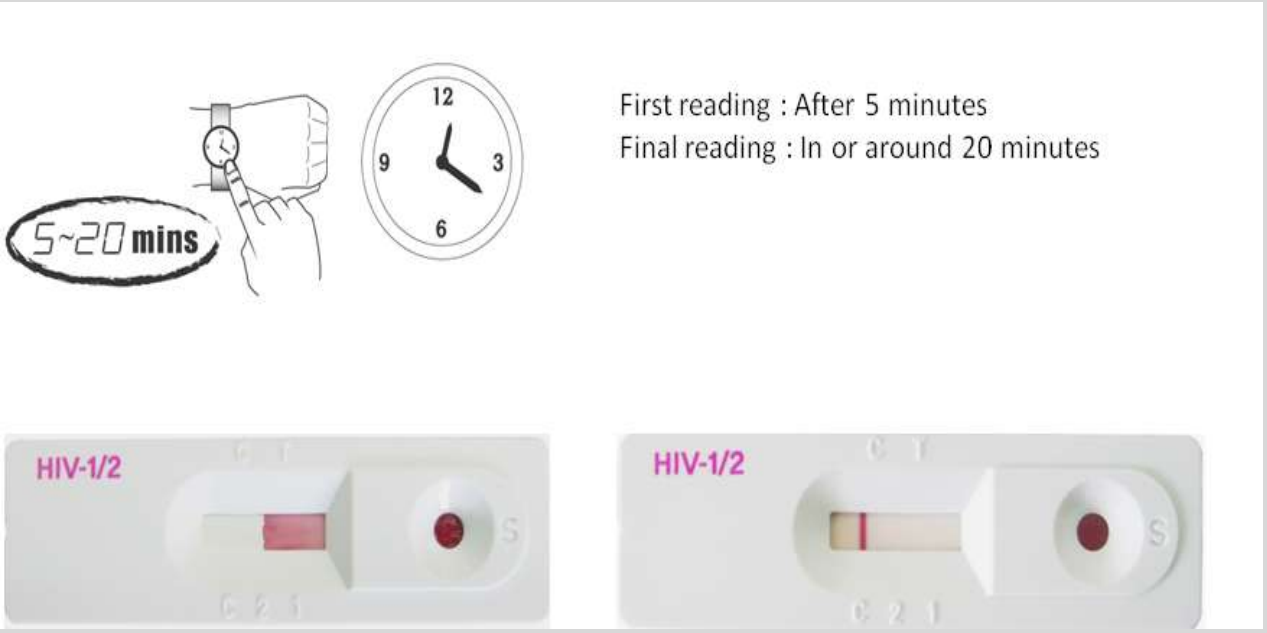

जांच के संभावित परिणाम–

- **प्रतिक्रियाशील / पाजीटिव :** नियंत्रण क्षेत्र तथा रोगी क्षेत्र पर किसी भी तीव्रता की दो रेखाओं की प्रस्तुति।
- **गैर–प्रतिक्रियाशील :** रोगी क्षेत्र में नहीं, केवल नियंत्रण क्षेत्र में रेखा की प्रस्तुति।
- **अवैधः** नियंत्रण क्षेत्र पर कोई भी रेखा नहीं दिखाई देती। ऐसी स्थिति में यदि रोगी क्षेत्र में रेखा दिखाई दे तो भी एक नए किट का प्रयोग करके पुनः जांच की जानी चाहिए।

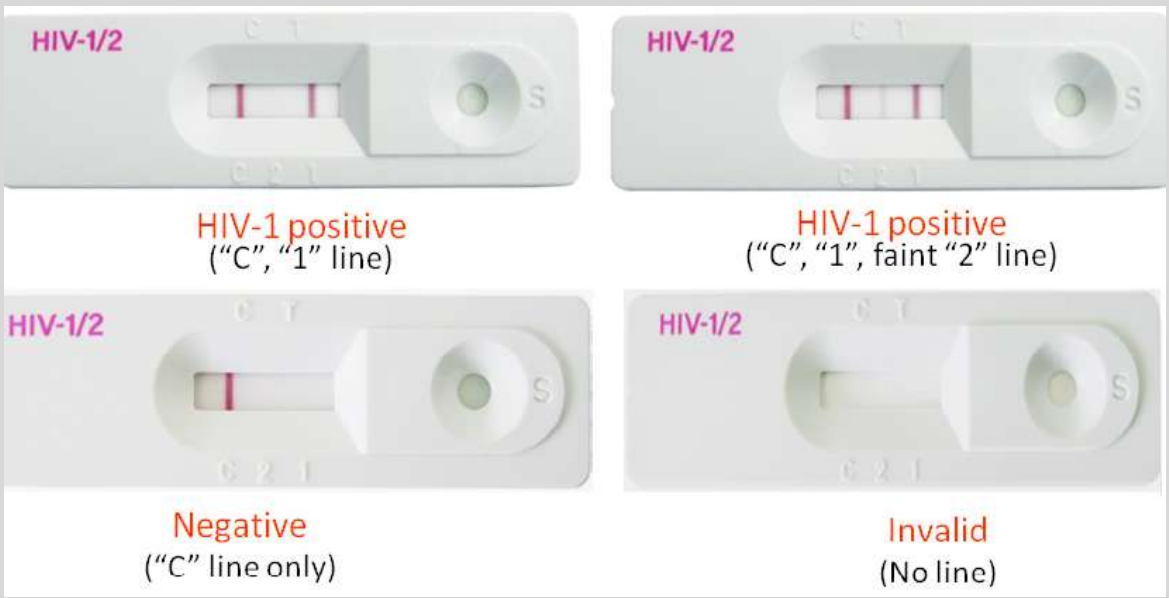

हैण्डआऊट 11.3
(गर्भावस्था के दौरान पीपीटीसीटी सेवाएं)

गर्भावस्था के दौरान पीपीटीसीटी सेवाए

- भारत में सभी प्रसव–पूर्व माताओं को एचआईवी की जांच के लिए परामर्श प्रदान किया जाता है। उनकी जांच उनके द्वारा स्वेच्छा से सुविज्ञतापूर्ण सहमति देने के बाद ही की जा सकती है।
- एचआईवी जांच के परिणामों को सर्वथा गोपनीय रखा जाना चाहिए।
- स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं (एएनएम/स्टाफ नर्स/डाक्टर/प्रयोगशाला तकनीशियन आदि) को रोगी की गोपनीयता की, जिसमें एचआईवी की जांच के परिणाम शामिल हैं, रक्षा करनी चाहिए।
- सभी गर्भवती महिलाओं की एचआईवी परामर्श एंव जांच सुविधाओं के बारे में जानकारी निम्नानुसार देंगे।

परीक्षण पूर्व	**जांच में नेगेटिव आने पर**	**जांच में पॉज़िटिव आने पर**
✓ एचआईवी संक्रमण तथा जांच के संबंध में शिक्षा ✓ एचआईवी जांच संबंधी निर्णय ✓ पोषण, स्वच्छता संबंधी शिक्षा ✓ संस्थानगत प्रसव का महत्व ✓ जोखिम कम करना ✓ बाहर रहने का विकल्प	✓ रोकथाम ✓ सुरक्षित मातृत्व ✓ नियमित अनुवर्ती कार्रवाई	✓ मनोवैज्ञानिक सहायता ✓ सुरक्षित मातृत्व ✓ नेवीरेपीन रोगनिरोधन ✓ संस्थानगत प्रसव विकल्प ✓ शिशु आहार व्यवहार ✓ देखभाल और उपचार के लिए एआरटी रेफरल ✓ नियमित अनुवर्ती कार्रवाई

गर्भवती महिला को प्रसव पूर्व निम्न सुविधाओं की जानकारी देंगे

- एचआईवी के लिए स्क्रीनिंग
- आईसीटीसी में रेफरल एचआईवी पुष्टिकरण जांच
- प्रसव–पूर्व दौरे
- आहार + विटामिन तथा लौहपूरक
- सुरक्षित यौन व्यहार करना
- किसी भी संक्रमण/एसटीआई/आरटीआई का इलाज करना
- अस्पताल में प्रसव का महत्वः सिजेरियन खंड के प्रति योनिक खंड के संकेत
- उसकी एचआईवी की स्थिति का मानीटरींग जारी रखनाः सीडी काउंट/ओआई की उपस्थिति
- जीवनसाथी की एचआईवी स्क्रीनिंग।

एआरवी निम्न द्वारा एचआईवी संकमित माता से बच्चें में संक्रमण की जोखिम कम करता है

- विषाणु प्रजनन तथा विषाणुभार की कमी के माध्यम से माता के समग्र स्वास्थ्य में सुधार लाना

- मातृ संक्रमण का उपचार करना
- एचआईवी प्रभावित शिशु की रक्षा करना

जीवन पर्यनत एआरटी सभी एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं हेतु

- इसके द्वारा एचआईवी संक्रमित माता से बच्चें में संक्रमण की दर केवल स्तनपान कर रहे शिशुओं में 5 प्रतिशत से कम एवं केवल उपर का आहार ले रहे बच्चों में 2 प्रतिशत से भी कम हो जाती है।
- जीवन पर्यन्त एआरटी सभी एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं को सीडी–4 गणना एवं नैदानिक अवस्था के बिना ध्यान दिये उपलब्ध करवाई जानी है।

एचआईवी से संक्रमित युगल तथा गर्भावस्था

- एचआईवी पाजीटिव महिलाओं और युगलों को गर्भावस्था तथा शिशु जन्म के संबंध में निर्णय लेने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए।
- यौन संपर्क के दौरान पुनःसंक्रमित होने और साथ ही एचआईवी के एक अलग उप–भेद से संक्रमित होने का जोखिम बहुत अधिक होता है और युगल को, जब कभी वे बच्चा पैदा करने की योजना बनाएं अवश्य परामर्श दिया जाना चाहिए।
- युगलों को माता–पिता से बच्चे को एचआईवी संचरण की रोकथाम के संबंध में परामर्श दिया जाना चाहिए।

निम्न पक्षों के संबंध में जानकारी प्रदान करें

- ✓ शिशु को एचआईवी संचरण का जोखिम।
- ✓ गोद लेने की संभावना।
- ✓ स्वयं अपना बच्चा करने का परिणाम।
- ✓ पीपीटीसीटी कार्यक्रम के अधीन संचरण के जोखिम को कम करने के लिए उपलब्ध निवारक सेवाएं।
- ✓ परिवार नियोजन के विभिन्न विकल्प, विशेष रूप से सुरक्षित यौन व्यवहार अर्थात कंडोमों के प्रयोग की जरूरत जिससे कि एचआईवी के पुनः संक्रमण को रोका जा सके।

हैण्डआऊट 11.4
(प्रसव के दौरान पीपीटीसीटी सेवाएं)

एचआईवी संक्रमण की अधिकतम संभावना प्रसव पीड़ा एवं प्रसव के समय होती है।

प्रसव के समय प्रसाविका की भूमिका

यदि महिला की गर्भावस्था के दौरान जांच नही हुई हैं तो एचआईवी की जांच करना।

महिला के रिएक्टिव पाये जाने पर चिकित्सकीय परामर्श से टीएलई दवाई देना।

यदि महिला नेगेटिव पाई जाती हैं तो सामान्य कार्यप्रद्धति का अनुसरण करना।

प्रसव के पश्चात् महिला की एचआईवी जांच का पुष्टिकरण करवाकर एआरटी केन्द्र से जोड़ना।

प्रसव कक्ष के स्टाफ हेतु मानक परिचालन प्रक्रिया

महिला सीधी प्रसव पीड़ा में आ रही हैं।

माता

पूर्व में एचआईवी जांच की ज्ञात स्थिति (Positive)

एआरटी पर

पूर्व में दी जा रही एआरटी दवाओं को प्रसव के समय एवं प्रसव पश्चात् जारी रखेंगे।

एचआईवी संक्रमित माता से पैदा हुये शिशु को जन्म के पश्चात् नेविरापाईन दवाई दे एवं दिशानिर्देशानुसार 6 सप्ताह / 12 सप्ताह तक जारी रखें।

एआरटी पर नही

माता

पूर्व में एचआईवी जांच की अज्ञात स्थिति

Whole Blood Finger Prick Test द्वारा महिला की प्रसव कक्ष में जांच

यदि महिला एचआईवी रिएक्टिव पाई जाती हैं तो

गर्भवती महिला को **TLE** (टेनोफोवीर (टीडीएफ) 300 एमजी + लेमिव्यूडिन (3टीसी) 300 एम जी. इफाविरेन्ज़ (ईएफवी) 600 एमजी) की एक गोली देंगे

अगली सुबह महिला का आईसीटीसी केन्द्र पर एचआईवी का तीन रेपिड जांच किट् द्वारा पुष्टिकरण करवायेंगे।

प्रसव प्रश्चात् भी महिला की TLE जारी रखेंगे एवं उसे एआरटी केन्द्र से जोड़ेगें।

सुरक्षित प्रसव तकनीक	
क्या करें	**क्या नही करें**
✓मानक कार्यस्थल सावधानियों (UWP) का पालन करना ✓न्यूनत्तम योनी परीक्षण करना एवं कीटाणुनाशक तकनीक का प्रयोग। ✓संकुचन एवं भ्रूण ह्रदय ध्वनि पर निगरानी रखना। ✓माता को दिशानिर्देशानुसार एआरटी दवाई देना।	× बिना संकेत झिल्ली के फटने को टालना। × भेदने वाले क्रियाकलापों से बचना। × इंस्ट्रूमेंटल प्रसव का प्रयोग तब करें जब ऐसा करना नितांततः जरूरी हो। (वैक्यूम अथवा चिमटी) × भगछेदन से बचना। (Avoid episiotomy) × नवजात का चूषण नैसोगैस्ट्रिक नली से जब तक कि वह मिकानियम–रंजित न हो।

तत्काल नवजात की देखभाल	
क्या करें	**क्या नही करें**
✓नवजात को सूखायें एवं गर्म रखें ✓Clear airway • जैसे ही नवजात का हेड डिलीवर हो उसका मुंह एवं नाक साफ करें। ✓उचित प्रकाश नयी ब्लेड से नाल को काटें ✓स्तनपान जन्म के 1 घंटे के अन्दर शुरू करावें। ✓नवजात को निर्देशानुसार नेवीरापाईन सिरप दें।	× मूंह से सक्शन ना करें। × नवजात को नेजो–गेस्ट्रिक ट्यूब से सक्शन ना करें।

एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं से हुए शिशुओं हेतु नेविरापाईन दवा की मात्रा

(10 mg of Nevirapine in 1ml suspension)

नवजात का जन्म के समय वजन (ग्राम में)	प्रतिदिन नेवीरापाइन की खुराक (एमएल)	प्रतिदिन नेवीरापाइन की खुराक (एमएल)	समयावधि
2000 ग्राम से कम	2 मिलीग्राम /kg. (दिन में एक बार) शिशु रोग विशेषज्ञ की सलाह से	0.2 एमएल (दिन में एक बार)	नवजात माँ का दूध पी रहा हो अथवा ऊपर का आहार ले रहा न्यूनतम 6 सप्ताह दी जायेगी
2000-2500 ग्राम के मध्य	10 मिलीग्राम /kg. (दिन में एक बार)	1.0 एमएल (दिन में एक बार)	
2500 ग्राम से अधिक	15 मिलीग्राम /kg. (दिन में एक बार)	1.5 एमएल (दिन में एक बार)	

गर्भवती महिला का सीधे प्रसव पीड़ा में आना

यदि गर्भवती महिला सीधे प्रसव पीड़ा के साथ अस्पताल में आती हैं, तो महिला की एचआईवी जांच करना

↓

गर्भवती महिला के एचआईवी जांच में रिएक्टिव पाये जाने पर

↓

गर्भवती महिला को TLE (टेनोफोवीर (टीडीएफ) 300 एमजी़ + लेमिव्यूडिन (3टीसी) 300 एम जी़ इफाविरेन्ज़ (ईएफवी) 600 एमजी) की एक गोली देंगे

प्रसव के समय

↓

अगली सुबह उक्त महिला में एचआईवी संक्रमण का तीन रेपिड जांच द्वारा पुष्टिकरण कर उक्त महिला का रक्त नमूना सीडी 4 जांच हेतु भिजवाना।

↓

एचआईवी की पुष्टि पश्चात् महिला को जीवन पर्यन्त एआरटी दवाईयां देने हेतु एआरटी केन्द्र से जोड़ना

प्रसवोत्तर

↓

नवजात *: जन्म के समय से दिशानिर्देशानुसार नेविरापाईन सिरप न्यूनतम 6सप्ताह देना।

माता को अन्य सुविधाओं का लाभ दिलवाने हेतु एआरटी केन्द्र पर पंजीकृत करवाना।

* यदि महिला को एआरटी लेते हुये 6 माह से कम हुआ हैं व शिशु स्तनपान कर रहा हैंतो नेविरापाईन सिरप 12 सप्ताह तक दी जानी हैं।

हैण्डआऊट 11.5
(प्रसवोत्तर पीपीटीसीटी सेवाएं)

एचआईवी प्रभावित शिशुओं की माताओं को निम्न के संबंध में परामर्श देंगें

- शिशुओं के लिए सुरक्षित आहार व्यवहार का पालन करें
- नियमित जांच के लिए आएं
- शिशु के लिए सभी प्रतिरक्षण प्रदान कराएं
- संक्रमण के किसी भी संकेत की सूचना दें
- माता–पिता को शीघ्र शिशु निदान (18 महीने से कम आयु के शिशुओं के लिए) के लिए भेजें
- जब तक शिशुओं का एचआईवी पाजीटिव के रूप में निदान न किया गया हो और यदि वे
  - ✓ एचआईवी पाजीटिव हैं तो 5 वर्ष तक के लिए काट्रीमोक्साजोल रोगनिरोधन (यदि डाक्टर द्वारा निर्धारित किया गया हो) दें
  - ✓ आकलन करें और एआरटी के लिए भेजें
  - ✓ डाक्टर द्वारा यथानिर्धारित एआरटी विधान का पालन करें

एचआईवी संक्रमित माता से पैदा हुये शिशु को दी जाने वाली आवश्यक सुविधाएं

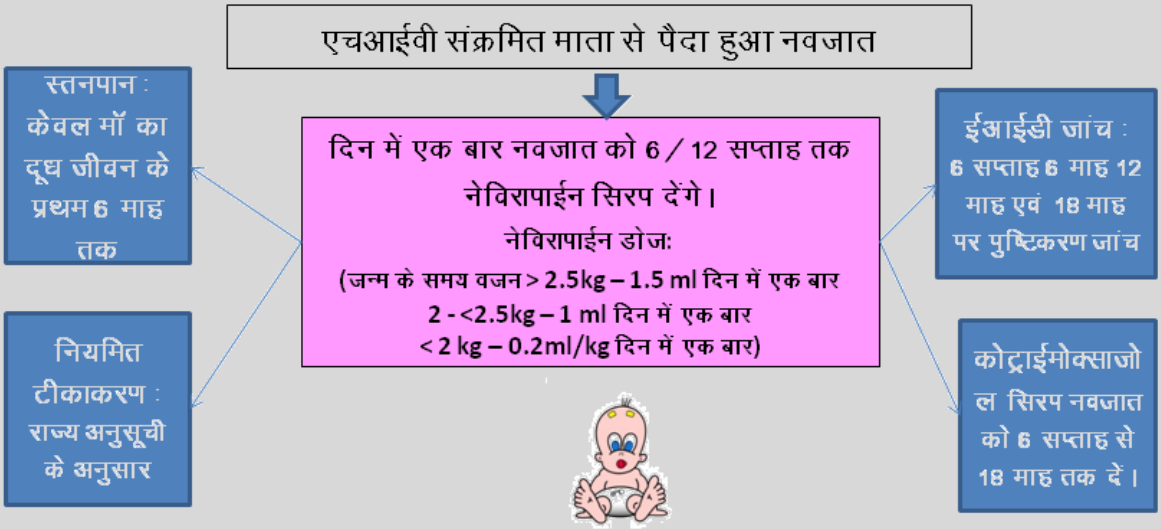

नवजात के लिये करें	जन्म पर	6 सप्ताह	6 माह	12 माह	18 माह
नेविरापाईन सिरप	√	√			
केवल स्तनपान	√	√	√		
CO-TRIMOXAZOLE सिरप		√	√	√	√
ईआईडी		√	√	√	√
नियमित टीकारण राज्य अनुसूची के अनुसार	√	√	√	√	√

एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं से हुए शिशुओं हेतु नेविरापाइन दवा की अवधि (मॉ की एआरटी अवधि तथाआहार के आधार पर)

मॉ की एआरटी पर होने की अवधि	बच्चे का पोषण	नेविरापाइन दवा की अवधि
छः माह से कम	केवल स्तनपान	12 सप्ताह
छः माह से ज्यादा	केवल स्तनपान	6 सप्ताह
छः माह से कम या ज्यादा	केवल उपरी आहार	6 सप्ताह

एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं से हुए शिशुओं हेतु अवसरवादी संक्रमणों की रोकथाम हेतु **Co-trimoxazole**दवा की मात्रा (6 सप्ताह की आयु से)		
वज़न (किग्रा)	**सीरप 5 एमएल** (40mg TMP/200 SMX)	**बच्चों की घुलने वाली गोली** (20mg TMP/100mg SMX)
<5	2.5 **एमएल** (½ **छोटी चम्मच**)	1 **गोली**
5 – 10	5 **एमएल** (1 **छोटी चम्मच**)	2 **गोली**
10 – 15	7.5 **एमएल** (1½ **छोटी चम्मच**)	3 **गोली**
15 – 22	10 **एमएल** (2 **छोटी चम्मच**)	4 **गोली**

एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं से हुए शिशुओं हेतु पोषण संबंधी देखभाल

केवल स्तनपान	केवल उपरी आहार
• प्रथम 6 माह केवल स्तनपान। • एचआईवी नेगिटिव होने पर 6 माह से 12 माह तक मिश्रित आहार (स्तनपान के साथ उपरी आहार) • एचआईवी **संक्रमित** निर्धारित होने पर 6 माह से 24 माह तक मिश्रित आहार (स्तनपान के साथ उपरी आहार)	• जन्म से ही बच्चे को केवल उपरी आहार ही देना।

एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिलाओं से हुए शिशुओं हेतु एचआईवी संक्रमण की जांच **Early Infant Diagnosis (EID)**

- DNA-PCR के माध्यम (एन्टीजन जांच) से 18 माह से छोटे बच्चों में एचआईवी की जांच।
- 6 सप्ताह, 6 माह एवं 12 माह (स्तनपान छोडने के 6 सप्ताह पश्चात्)
- यह सुविधा निकटस्थ एकीकृत परामर्श एवं जांच केन्द्र पर उपलब्ध है।

विस्तृत जानकारी के लिए मॉड्यूल 12 को रेफर करे।

एचआईवी संक्रमित माताओं से होने वाले शिशुओं हेतु आवश्यक जानकारियां

- नेविरापाइन सिरप कम से कम 6 सप्ताह।
- Early Infant Diagnosis (EID) की जांच 6 सप्ताह, 6 माह एवं 12 माह (स्तनपान छोडने के 6 सप्ताह पश्चात्)
- केवल स्तनपान प्रथम 6 माह, स्तनपान एवं मिश्रित आहार 01 वर्ष तक यदि बच्चा EID जांच में नेगिटिव है। यदि बच्चा EID जांच में पोजिटिव है तो स्तनपान एवं मिश्रित आहार 2 वर्ष तक।
- टीकाकरण कार्यक्रम अनुसार टीकाकरण।
- Co-trimoxazole दवा 6 सप्ताह से 18 माह तक।
- बच्चे में एचआईवी संक्रमण की पुष्टि 18 माह पश्चात् तीन अलग अलग एचआईवी त्वरित जांच किट द्वारा करना।

हैण्डआऊट 11.6

(HIV जॉच एवं प्रबन्धन में चिकित्साकर्मियो की भूमिका)

चिकित्साकर्मियो की भूमिकायें –

1. **राज्य/जिला शिशु एवं प्रजनन अधिकारी –**
   - गर्भवती महिलाओं की एचआईवी जांच का कार्य योजना अनुसार क्रियान्वयन करवाना।
   - स्वास्थ्य केन्द्रों पर एचआईवी जांच किटों एवं दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना।
   - अन्तर एवं अन्तरा विभागीय समन्वय स्थापित करना।
   - संबंधित चिकित्सा कर्मियों का प्रशिक्षण करवाना।
   - रिपोर्ट एवं रेकार्ड का संधारण करवा प्रत्येक माह एचएमआईएस में रिपोर्ट करवाया जाना सुनिश्चित करवाना।
2. **चिकित्सा अधिकारी –**
   - चिकित्सा संस्थान में आने वाली प्रत्येक गर्भवती महिला को एचआईवी जांच सुविधा उपलब्ध करवाना।
   - सभी एचआईवी संक्रमित माताओं को उपचार उपलब्ध करवाना।
   - एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला के यौन साथी की एचआईवी जांच एवं उपचार सुविधा उपलब्ध करवाना।
   - सुरक्षित संस्थागत प्रसव सुनिश्चित करवाना।
   - एचआईवी संक्रमित माता से पैदा हुये शिशु को ईआईडी सेवाओं से जोड़ना।
   - एचआईवी संक्रमित महिला का उपचार पश्चात् फोलोअप करना।
   - रिपोर्ट एवं रेकार्ड की जांच करना।
3. **एएनएम –**
   - गर्भवती महिलाओं में एचआईवी जांच हेतु जागरूकता पैदा करना।
   - सभी गर्भवती महिलाओं का पंजीयन कर उनकी पहली एएनसी विजिट में Whole Blood Finger Prick Test Kit द्वारा एचआईवी जांच करना।
   - एचआईवी रिएक्टिव गर्भवती महिलाओं का पुष्टिकरण करवाना।
   - एएनसी रजिस्टर में एचआईवी जांच का रेकार्ड रखना।
   - एचआईवी संक्रमित गर्भवती महिला के संस्थागत प्रसव में सहयोग प्रदान करना।
   - एचआईवी संक्रमित माता एवं बच्चों का उपचार हेतु फोलोअप करना।
   - गर्भवती महिला को पोषण एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श देना।
4. **लैब टेक्नीशियन –**
   - सभी गर्भवती महिलाओं की एचआईवी जांच एवं पुष्टिकरण करना।
   - लेबोरेट्री रजिस्टर में रेकार्ड रखना।
   - एचआईवी जांच किटों को दिशानिर्देशानुसार संग्रह करना।
   - एचआईवी पॉजिटीव माता एवं शिशु को उपचार के लिये रेफर करना।

5. **प्रसव कक्ष स्टाफ नर्स (प्रसाविका) –**

- जिन गर्भवती महिलाओं का गर्भावस्था के दौरान एचआईवी परीक्षण नही हुआ हैं, उनका Whole Blood Finger Prick Test Kit द्वारा जांच करना।
- जांच में रिएक्टिव पाये जाने पर चिकित्सकीय परामर्श पश्चात् गर्भवती माता को टीएलई दवाई प्रसव पूर्व देना।
- प्रसव मानक कार्य स्थल सावधानियों का पालन करते हुये करवाना।
- प्रसव पश्चात् संक्रमित उत्पादों का जैव चिकित्सीय अपशिष्ट प्रबंधन दिशानिर्देशानुसार निस्तारण करना।
- उपकरणों का विसंक्रमण और निर्जीवाणुकरण करना।
- नवजात को वजन के अनुसार नेविरापाईन दवाई पिलाना एवं टीकाकरण करना।
- अगली सुबह आईसीटीसी केन्द्र पर एचआईवी संक्रमण का पुष्टिकरण करवा एआरटी केन्द्र से जोड़ना।